मानवीय मूल्यों से समन्वित अध्यापक की आवश्यकता

अखिलेश तिवारी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर

सारांशः- *वर्तमान समय में मूल्यों के प्रति इतनी गंभीर अवहेलना प्रदर्शित की गई है कि आज विद्यार्थी व अध्यापक दोनों में चारित्रिक पतन स्पष्ट दिखाई दे रहा है। पुराने मूल्य जिसमें मानव कल्याण, समाज सेवा, देश सेवा, सचरित्र, पवित्रता, उदारता, सहनशीलता, शिष्टाचार आदि को विशेष महत्व दिया जाता था, आज धूमिल से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आधुनिक शिक्षा मूल्यविहीन, रसहीन, उद्देश्यहीन, तथा संस्कारहीन हो गई है क्योंकि इस शिक्षा का आधार आध्यात्मिकता न होकर विज्ञान हो गया है। मूल्यों का स्रोत मानव का विवेक है। शिक्षा की परिधि का केंद्र बिंदु अध्यापक है। संपूर्ण शैक्षिक गतिविधियां अध्यापक के इर्द गिर्द ही घूमती हैं। शिक्षक की प्रतिष्ठा समाज की सामाजिक सांस्कृतिक नैतिकता का प्रतिबिम्ब होती है। शिक्षक की भूमिका मूल्यों के संरक्षक के रूप में होती है। छात्रों को मूल्यों की शिक्षा देने का दायित्व शिक्षक का ही होता है। शिक्षा में मूल्यों की शिक्षा को औपचारिक न बनाकर अनिवार्य कर दिया जाए तो हम पतन की ओर जाते समाज व राष्ट्र को रोक सकते हैं। देश, समाज व मानव जाति की शांति व सुरक्षा, और विकास तथा उसकी खुशहाली का एकमात्र विकल्प मानवीय मूल्यों की शिक्षा देना है जिससे समाज के प्रत्येक वर्ग का दृष्टिकोण सकारात्मक बन सके। क्योंकि हमारे भारत की मिट्टी के अन्दर अद्भूत सांस्कृतिक समन्वय के तत्व प्राकृतिक रूप से मौजूद हैं, इसलिए हमारे शिक्षकों को चाहिए कि वे हृदय की विशालता का परिचय देते हुए शिक्षा के वैश्वीकरण को अपनाए, उसे स्वयं में समाहित कर शैक्षिक जगत में एक अद्भुत समन्वयात्मक सूत्र का प्रचार करें।*

मुख्य शब्द- मानवीय मूल्य, अध्यापक।

1. पृष्ठभूमि

"अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं, संस्कारों की जड़ों में पानी देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींच कर महाप्राण शक्तियों बनाते हैं।"

-महर्षि अरविन्द

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्यों की कमी के कारण अत्पना गम्भीर स्थिति गति होने के स्पष्ट लक्षण परिलक्षित हो रहे हैं। प्राचीनकाल में आचार्य शिक्षा में मूल्यों को समन्वित कर शिष्यों को शिक्षा प्रदान किया करते थे, परन्तु वर्तमान समय में मूल्यों के प्रति इतनी गंभीर अवहेलना प्रदर्शित की गई है कि आज विद्यार्थी व अध्यापक दोनों में चारित्रिक पतन स्पष्ट दिखाई दे रहा है। जिसके कारण समाज में अनेकानेक समस्याएं दिन प्रतिदिन दिखाई दे रहीं हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उभरते नये आयामों और मूल्यों को देखते हुए आज

अध्यापकों में गुणात्मक उन्नयन की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है ताकि अध्यापक अपने में अंतर्निहित मूल्यों की महत्ता को आत्मसात करते हुए व्यावसायिक सोच के संकुचित दायरे से बाहर निकलकर देश के एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका अदा कर सके। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से मूल्यों से समन्वित अध्यापक की आवश्यकता के प्रति ध्यान आकर्षित कराने हेतु कुछ विचार प्रकट किए गए हैं जो वर्तमान समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक व युक्तिसंगत प्रतीत हो रहे हैं।

व्यक्ति व्यक्ति से जुड़कर समाज का निर्माण होता है। जब समाज में रहने वाले व्यक्ति परमार्थ के कार्य करते हुए सुख का अनुभव करने लगे तो वही मानव मूल्य के द्योतक माने जाते हैं। भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ सर्वधर्म समभाव का महत्व है। समयानुसार मूल्यों का परिवर्तन होता रहता है। चिन्तन का विषय यह है कि मूल्य जो मानव के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को निर्धारित करते हैं। क्या उनका परीक्षण निरीक्षण आवश्यक है? तो कहना होगा - अवश्य।

पुराने मूल्य जिसमें मानव कल्याण, समाज सेवा, देश सेवा, सचरित्र, पवित्रता, उदारता, सहनशीलता, शिष्टाचार आदि को विशेष महत्व दिया जाता था, आज धूमिल से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आधुनिक शिक्षा मूल्यविहीन, रसहीन, उद्देश्यहीन, तथा संस्कारहीन हो गई है क्योंकि इस शिक्षा का आधार आध्यात्मिकता न होकर विज्ञान हो गया है। विज्ञान की प्रक्रिया आरम्भ होने से शिक्षा के नाम पर मूल्य विखण्डित हो रहे हैं। आज शिक्षा एक व्यवसाय बन गया है जिसमें राजनीति ने अपना हस्तक्षेप किया है। आज के शिक्षण संस्थानों में राजनीतिक दबाब, लड़ाई झगड़े व अपमान की प्रवृति देखने को मिलती है तथा अनचाहे सामाजिक वातावरण को बढ़ावा देते हैं। शिक्षा से जुड़े अधिकारियों में मूल्यों का पतन हो रहा है। अध्यापन और प्रशासनिक समुदाय में स्वार्थपरता देखी जा सकती है। भाईचारा, सहयोग, सामाजिक सेवा, आत्मानुशासन, परिश्रम, ईमानदारी जैसे मूल्य मानो शिक्षा में कहीं खो गए हैं। शैक्षिक मूल्यों के विघटन के कारण आज का व्यक्ति श्रद्धाविहीन, आस्थाविहीन, हृदयहीन और लक्ष्यहीन होता जा रहा है। व्यक्ति विश्वविद्यालयों की बड़ी बड़ी उपाधियां प्राप्तकर भी जीवन, जगत, आत्मा, परमात्मा की सही धारणायें नहीं प्राप्त कर पाता। शिक्षा में समग्रता का अभाव होने के कारण समाज एवं उसकी समस्याओं से उसका संबंध विच्छेद सा हो गया है। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित है इससे छात्रों की योग्यताओं, सूजनात्मकता एवं जिज्ञासा का समुचित मूल्यांकन नहीं हो रहा।

2. मूल्य की अवधारणा

पिछले कुछ दशकों से मूल्यों पर मंचन बुद्धिजीवियों के विमर्श का प्रमुख विषय बना हुआ है। इन दिनों मूल्यों का जो क्षरण हो रहा है, उसने मानव मूल्यों पर चिन्ता को जन्म दिया है, उसी के कारण विद्यालयों में मूल्य शिक्षा की अवधारणा पनपी है। यह मूल्य शिक्षा क्या है? क्या नैतिक शिक्षा का ही एक रूप है? मानवीय मूल्य क्या है? इन सबके वास्तविक अर्थ की तलाश करनी हो तो उस शब्द की अर्थछाया

तलाशनी होगी जिसका यह अनुवाद है। प्राचीन भारत में इस अवधारणा के लिए अनेक अन्य शब्द प्रयोग होते थे जैसे-गुण, आदर्श, धर्मलक्षण,सिद्धांत सद्गुण आदि। मूल्य स्वयं में एक अमूर्त कल्पना एवं अत्यन्त व्यापक अर्थ समेटे हुए है जिसमें अनेक प्रकार के आयामों को देखा व परखा जाता है। ये एक ओर किसी भी समाज की संस्कृति, तो दूसरी ओर किसी भी समाज के सदस्यों के व्यवहार की कसौटी माने जाते हैं। मूल्य ही मनुष्य के लिए आदर्श, उद्देश्य, लक्ष्य, गन्तब्य, मनोरथ एवं साध्य बनते हैं तथा जीवन की सार्थकता में सहयोगी होते हैं। इन्हीं मूल्यों के कारण मानव मन में विश्वास, श्रद्धा, प्रेरणा, बफादारी, जिम्मेदारी, कर्तव्यभावना जैसे भाव जागृत होते हैं। मूल्य यथार्थ और आदर्श के मध्य संयोजक की भूमिका निभाते हैं। मूल्यों का बोध विवेक शक्ति उत्पन्न होने पर ही संभव होता है। मानव समाज में सदा से मूल्यों, आदर्शों तथा चिन्तन की व्यवस्था रही है। मानव व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए लक्ष्य, आदर्श और व्यवहार के कुछ प्रतिमान निर्धारित करता है और उन्हीं के आधार पर अपना जीवनयापन करता है। पंडित मदन मोहन मालवीय का विचार इस संदर्भ में सार्थक है, "नैतिकता मनुष्य की उन्नति का आधार है। नैतिकता से रहित मनुष्य पशुओं से भी निकृष्ट है।"

मूल्यों का स्रोत मानव का विवेक है। विवेक से विचार बनते है, विचारों से धारणा का जन्म होता है और धारणा से मूल्यों का निर्माण। ये धारणाएं ही विशिष्ट एवं बहुसम्मत होकर 'मूल्य' पर प्रतिष्ठित होती है। वैयक्तिक मूल्यों के नवीन युगबोध से ही सामाजिक मूल्य उत्पन्न होते हैं। समाज में रहता हुआ मनुष्य या शिक्षक समाज के मूल्यों व नियमों का पालन करता है। वह सामाजिक संबंधों को सुधारने की आकांक्षा, नैतिक जीवन को विकसित करने की लालसा और सामाजिक प्रतिष्ठा की कामना रखता है। वर्तमान परिवेश में अर्थ की प्रधानता ने व्यक्ति, परिवार और समाज के मूल्यों को पूरी तरह से बदल दिया है। आज के व्यक्ति की पहचान उसकी धन दौलत के द्वारा निर्धारित की जाती है। डॉ. शम्भूनाथ सिंह ने कहा है कि, "मूल्य ऊपर से आरोपित नहीं किए जाते। वे या तो परम्परागत संस्कारों के भीतर से उपलब्ध होकर मनुष्य के अस्तित्व के अंग बन जाते हैं या फिर नयी परिस्थितियों और पूर्व प्रचलित परम्परा के संघर्ष से मनुष्य के मन में नए रूप में जन्म लेते हैं, क्योंकि मूल्यों की कलम नहीं लगाई जाती,वे राष्ट्रीय परम्परा की जमीन से स्वतः उगते और विकसित होते हैं।"

3. शिक्षा और मूल्य विकास

सुकरात का कहना था कि ज्ञान ही सद्गुण है अर्थात् यदि उचित मूल्यों की जानकारी बालकों को दी जाए तो बालकों में निस्संदेह सद्गुण आ जाएगा। उनका विश्वास था कि मूल्यों की शिक्षा देकर व्यक्ति को उत्तम बनाया जा सकता है। यह सब शिक्षालयों में दी गई शिक्षा द्वारा ही संभव है। समाज के प्रत्येक वर्ग में चाहे शिक्षक शिक्षार्थी हो चाहे राजनीतिज्ञ या अभिभावक हो, सभी शिक्षा को ही अपनी उन्नति का माध्यम स्वीकार करते हैं।शिक्षा कभी भी मूल्य रहित नहीं हो सकती। शिक्षा ही मूल्य सीखने का ऐसा उचित माध्यम

है जिसके द्वारा मूल्यों का विकास तथा समाज में उनका प्रतिबिम्ब देख पाते हैं और विद्यालय का मूल्य प्रधान परिवेश मूल्यों के बीजारोपण, अंकुरण व वृद्धि में सहायक होता है। जीवन मूल्य अंलकारों के समान व्यक्ति के व्यक्तित्व में चमकते हैं।मूल्य विकास और शिक्षा के संबंध को दर्शाते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा, "मूल्य शिक्षा की महान उपयोगिता केवल तथ्य एकत्र करने में नही है। बल्कि मनुष्य को जानना है और मनुष्य को इस योग्य बनाना है कि वह अपने आपको जान सके।"

विवेकानंद के अनुसार," हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे कि चरित्र बनता है, मन की शक्ति बहती है, प्रतिभा का विस्तार होता है और आदमी अपने पैरों पर खड़ा हो सकता हो। मूल्यों के विकास में भाषा शिक्षण का विशेष योगदान है।"

मूल्य विकास में अध्यापक की भूमिका शिक्षा, जीवन मूल्यों के सम्प्रेषण में प्रेरक का कार्य करती है। इस शिक्षा रूपी उत्प्रेरक का संवाहक अध्यापक होता है।शिक्षक और छात्र वे नाविक हैं जो शिक्षा की नौका को जीवन सागर में खींचते हैं।

शिक्षा का सर्वाधिक सक्रिय साधक शिक्षक है। शिक्षक का चरित्र निर्मल, हृदय शुद्ध और उदार आचरण होना चाहिए क्योंकि शिक्षक का ज्ञान, शिक्षक का अपना विश्वास, अपनी धारणाओं का छात्रों पर गहरा प्रभाव डालती है। शिक्षक सजीव, विकासोन्मुख, गतिशील छात्रों का मार्गदर्शक है। उनका पथ निर्देशक है। वह उनका सच्चा मित्र और सहायक भी है। शिक्षक की प्रतिष्ठा समाज की सामाजिक सांस्कृतिक नैतिकता का प्रतिबिम्ब होती है। शिक्षक की भूमिका मूल्यों के संरक्षक के रूप में होती है।छात्रों को मूल्यों की शिक्षा देने का दायित्व शिक्षक का ही होता है क्योंकि वह छात्र का अफसर नही होता अपितु उनका ऐसा मित्र एवं शुभचिंतक है जो सदैव उनके हित एवं कल्याण की चिंता करता है।शिक्षक छात्र का माता पिता दोनों है। उसे आंखों से पिता और हृदय से माता होना चाहिए। संक्षेप में शिक्षक को अपने जीवन में सभी प्रस्तावित गुणों का समन्वित और संतुलित विकास करना चाहिए।इसलिए अध्यापक का व्यक्तित्व ही मूल्यों का छिपा हुआ पाठ्यक्रम है, यदि शिक्षक स्वयं कक्षा में देर से जाए और विद्यार्थियों को समय की पाबंदी का पाठ पढ़ाए, यह नहीं हो सकता। शिक्षक को सर्वप्रथम अपना व्यवहार सुधारना होगा ताकि अध्यापक होने के नाते सर्वोच्च मूल्यों को न केवल अपने व्यवहार में अपनाए वरन विद्यार्थियों के समक्ष स्वयं को एक आदर्श स्थापित कर उन्हें मूल्यपूर्ण जीवन के लिए प्रेरित करें। मूल्यपरक शिक्षा का यही मूल उद्देश्य है। बच्चों को मूल्य शिक्षा देकर सच्चा मानव बनाकर समाज के भावी कर्णधार बनाना शिक्षक का कर्तव्य है। अध्यापक का पुनीत कर्तव्य है कि माता पिता ने जिन बच्चों को उसे सौंपा है, उन्हें उचित शिक्षा देकर चरित्रवान बनाए। मूल्यों की शिक्षा में अध्यापक का आचरण अधिक प्रभावी होता है।

एम.टी. रामजी ने ठीक कहा है- "स्कूल अध्यापकों तथा शिक्षा कार्यकर्ताओं एवं प्रशासकों को स्कूल की क्रियाओं को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि जब ये क्रियाएं मूल्यों के प्रति जागरूक अध्यापकों द्वारा संगठित की जाती है तो इन से मूल्यों के शिक्षण में विकास होता है।"

सुयोग्य अध्यापक ही जानता है कि छात्रों का चरित्र उदार बनाने के लिए उसे क्या करना चाहिए? यह उनके लिए ऐसे परिवेश का निर्माण करता है, जिनमें छात्रों के सम्मुख कुछ कसौटियां आती है, जिनके द्वारा छात्रों की चारित्रिक परीक्षा होती है। जहां कहीं छात्र

चूक करता है वहां अध्यापक ही उसे संभालता है और सन्मार्ग पर लाता है। अतः शिक्षक को विद्यालय में मूल्यों के संरक्षक के रूप में रहना होगा।वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा एक व्यवसाय बन गया है और शिक्षक एक व्यवसायी। प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति भौतिकवादी चनता जा रहा है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अधिकतर शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों द्वारा मूल्यों का समावेशन कल्पना की बात समझा जाता है या थोथे आदर्शों की संज्ञा दी जाती है। मूल्यों के पतन की आड़ में मूल्य शिक्षा की प्रभावोत्पादकता को सन्देह की नजरों से देखते है और अन्य विषयवस्तु के रहने पर बल दिया जाता है तथा उसमें छिपे मूल्यों की परवाह नहीं करते हैं। जिसके कारण विद्यार्थियों का भविष्य धुंधला एवं अंधकारमय दिखलाई देता है।

अध्यापकों में मूल्यों की आवश्यकता

शिक्षा की परिधि का केंद्र बिंदु अध्यापक है। संपूर्ण शैक्षिक गतिविधियां अध्यापक के इर्द गिर्द ही घूमती हैं। शिक्षक राष्ट्र के भावी नायकों का निर्माण करता है और यह महान कार्य शिक्षक के गुरुतम दायित्व का संकेत है। परन्तु आजकल अधिकांश अध्यापक सुनियोजित मूल्य शिक्षा देने का प्रयत्न ही नहीं करते। आज मूल्यों को थोथे आदर्शों की संज्ञा दी जाती है। अनेक शिक्षक मूल्य शिक्षण को एक नाजुक मामला मानते हैं तथा अपनी प्रोफेशनल तैयारी को मूल्यों की शिक्षा देने के लिए अधिक उपयोगी नहीं मानते हैं जिससे वे मूल्यों की शिक्षा देने का साहस नहीं जुटा पाते हैं। कुछ शिक्षक ऐसे भी होते हैं जिनकी उन मूल्यों में आस्था नहीं होती जिन्हें वे पढ़ाना चाहते हैं अर्थात उनकी कथनी करनी में अन्तर होता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापक अपने कर्तव्यों से विमुख हो गया है, मानवता से जुड़े मूल्यों की अवहेलना करने लगा है। आज छात्र तथा शिक्षक के मध्य खाई चौड़ी होती जा रही है। सामान्य समाज की भांति शिक्षक और छात्र के भी संबंध रह गए हैं, न शिक्षक के जीवन का आदर्श है, न छात्र के जीवन में साधना। परीक्षा के समय दोनों के अरमानों के ताते खुल जाते हैं। मान, सम्मान, प्यार, स्नेह गुरु, शिष्य जैसी भावनाएं संभवतः एक माखौल का विषय बन गई है। आज शिक्षक कक्षा शिक्षण से दूर होकर धनार्जन की होड़ में ट्यूशन के लिए बाध्य कर देता है। अपने कार्य का अधिक पारिश्रमिक पाने का इच्छुक होते हुए भी यह कर्तव्यनिष्ठा त्यागकर अनुशासन से दूर हो गया है। ऐसे कई विद्यालय है जहां अध्यापक धूम्रपान करते हैं,

शराब पीते है और परिणामस्वरूप बुरे आचरण तथा चरित्र पेश करते हैं। वे कक्षाओं में पाठयक्रम पूरा करने में कोई रुचि नहीं लेते, कक्षाओं को समय से नहीं लेते और ड्यूटी से पलायन कर विद्यालय से गायब रहते है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापक के नैतिक व चारित्रिक मूल्य इस हद तक विघटित हो गए हैं कि वह छात्राओं से दुर्व्यवहार करने लगा है, सहयोगी अध्यापकों के साथ भी दुर्व्यवहार करते हैं। वे स्कूल के हिसाब-किताब में भी हेरा फेरी करने में संकोच नहीं करते। वे विद्यालय के लिए खरादी जाने वाली वस्तुओं में रिश्वत लेते हैं, वे अंक बढ़वाने, पेपर लीक करने, फजी प्रमाण बनाकर, नकल करवाने, प्रकाशकों की किताबें लगवाने के लिए पैसा वसूलते हैं। इस प्रकार शिक्षक सामाजिक मर्यादाओं का अतिक्रमण करता है। दिनोंदिन अध्यापक के मूल्य गिरते जा रहे हैं, जिसके दुष्प्रभाव से कोई भी अछूता नहीं रह सकता है। शिक्षकों के मूल्य आज इतने गिर गए हैं कि वे शिक्षा के पवित्र केंद्रों में राजनीतिक गुटबाजियां बनाने में व्यस्त हैं और राजकीय खजाने का नगण्य अंश जो शिक्षा के लिए आता है,

भ्रष्टाचार रूपी राक्षस बनकर उसे भी निगल जाने में संकोच नहीं करते। शिक्षण संस्थान बाजार की सांझे की दुकान बन गए हैं। प्रधानाचार्य सभी अंगों में तालमेल बिठाते बिठाते स्वयं शतरंज का खिलाड़ी बनता जा रहा है। शिक्षक एवं अन्य कर्मचारी भी स्वार्थपरक होकर व्यवस्था को ध्वस्त करने में लगे हैं, इस प्रकार की मूल्यविहीन रोजपरक शिक्षा एक कलंक के सिवाय कुछ नही हो सकती है।

4. अध्यापक में मानवीय मूल्य का समावेशन

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों के गिरते मूल्यों की दृष्टिगत करते हुए उनमें मानवीय मूल्यों के समावेशन की आवश्यकता है। मानवीय मूल्य कई तरह के हो सकते हैं- नैतिक मूल्य, आधारभूत मूल्य, आचारगत मूल्य,आंतरिक मूल्य,आध्यात्मिक मूल्य आदि। मानवीय मूल्य कितने गिने जा सकते हैं इस पर डी. धर्मपाल सैनी ने मूल्य कोष ही मानव मूल्य शब्दावली विश्वकोष नाम से प्रकाशित कर दिया है, जिसमें सैकड़ों की संख्या में क्षमा, आर्जव, सहिष्णुता, औदार्य, शुचिता आदि मूल्यों का वर्ण-क्रमानुसार विवरण उपलब्ध हैं। शिक्षकीय ज्ञान और सम्प्रेषण कौशल के साथ साथ आज विद्यार्थियों को आंतरिक रूप से सजक्त बनाने की आवश्यकता है जिससे वे चारित्रिक व्यवहार की दृष्टि से सबल बन सकें। इसके साथ ही उनमें सूजनात्मक और श्रेष्ठ चिंतन की क्षमता का विकास हो सके। यह कार्य अध्यापकों में मानवीय मूल्यों का विकास के द्वारा ही किया जा सकता है। अतः अध्यापकों में आज जिन मूल्यों के विकास की मूल रूप से आवश्यकता है, वे हैं- सत्य, धर्म,शुद्ध आचरण,प्रेम और अहिंसा। जिस प्रकार से एक हाथ में पाँच उँगलियाँ होती हैं जिनमें से प्रत्येक उँगली पूरे हाथ की कार्यशीलता और मुसलता को योगदान देती है, उसी प्रकार ये पाँचों मूलभूत मूल्य अध्यापक के कुशलतापूर्वक शिक्षण कार्य करने में आवश्यक व सहायक हैं। भारतीय शिक्षा आयोग में भी शिक्षक के इन्हीं मानवीय मूल्यों के विकास पर अधिक बल दिया गया था। इन सभी मानवीय मूल्यों को दृष्टिगत रखते हुए अध्यापक शैक्षिक कार्यक्रम की योजना और उसके क्रियान्वयन को सार्थकता प्रदान

करे।जिससे आज इस दिशा में गुणवतापूर्ण प्रशासन आ सके। गीता में कहा गया है कि- श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मो सुनिष्ठितात्।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मों भयावहः।।

यहाँ अध्यापक से अपेक्षा की गई है कि यह हर परिस्थिति में स्वधर्म के प्रति निष्ठावान रहे। अतः अध्यापकों में मानवीय मूल्य तभी समाहित हो सकते हैं जब वे स्वयं को प्रबुद्ध एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रस्तुत करने का सामर्थ्य अपने भीतर लाएं, क्योंकि इसी सामर्थ्य के साथ ही वे विश्वसनीय मार्गदर्शक और परामर्शदाता की भूमिका निभा सकते हैं। वे मूल्यों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दें, जिससे हमारा युवावर्ग भविष्य में देश के लिए गौरव की मिशाल बन सकें। उनका व्यक्तित्व संयमी, सचरित्र, आत्मज्ञानी, परिश्रमी और धैर्यवान हो, ताकि विद्यार्थी इनका अनुकरण कर आदर्श मानव बन सकें।

5. निष्कर्ष

शिक्षा में मूल्यों की शिक्षा को औपचारिक न बनाकर अनिवार्य कर दिया जाए तो हम पतन की ओर जाते समाज व राष्ट्र को रोक सकते हैं। देश, समाज व मानव जाति की शांति व सुरक्षा, और विकास तथा उसकी खुशहाली का एकमात्र विकल्प मानवीय मूल्यों की शिक्षा देना है जिससे समाज के प्रत्येक वर्ग का दृष्टिकोण सकारात्मक बन सके। क्योंकि हमारे भारत की मिट्टी के अन्दर अद्भूत सांस्कृतिक समन्वय के तत्व प्राकृतिक रूप से मौजूद हैं, इसलिए हमारे शिक्षकों को चाहिए कि वे हृदय की विशालता का परिचय देते हुए शिक्षा के वैश्वीकरण को अपनाए, उसे स्वयं में समाहित कर शैक्षिक जगत में एक अद्भुत समन्वयात्मक सूत्र का प्रचार करें-

जयं निजः परावेति गणना लघु चेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम्।।

सन्दर्भ सूची

1. अस्थाना, प्रो. ईश्वर हरण (2005). "शिक्षा दशा एवं दिशा". अकादमिक एक्सेलेन्स, दिल्ली।
2. अग्रवाल. जे. सी. (2001). "शिक्षा अनुसंधान". आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
3. कुमार, नरेश (2003). "बदलते सामाजिक परिवेश में शिक्षा का स्वरूप और शिक्षक का दायित्व". प्राइमरी शिक्षक, गोपाल नगर, सोनीपत, हरियाणा।
4. गुप्त, नाथूलाल (2002). "मूल्यपरक शिक्षा और समाज". नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. पाण्डेय, डॉ. राम शक्ल, (1994). "मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य". आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ।
6. माथुर, एस.एस. (2006). "टीचर एण्ड सैकेण्डरी एजुकेशन". आर. एस.ए. इंटरनैशनल, आगरा।